विचार बिन्दु

दानी कभी दुःख नहीं पाता, उसे कभी पाप नहीं घेरता। –ऋग्वेद

चुनाव लड़ने के लिये अंटी में अपार पैसा होना जरूरी

देश की वित्तमंत्री निर्मला सीतारमण का कहना है कि उनके पास लोकसभा चुनाव लड़ने के लिये पैसे नहीं हैं। एक मीडिया ईवेंट में बोलते हुए उन्होंने कहा कि उनके सामने यह भी समस्या थी कि वो चुनाव तमिलनाडु से लड़ें या आंध्र प्रदेश से। तमिलनाडु उनका गृह राज्य है और आंध्र प्रदेश उनके पति का। इन दो कारणों के अलावा सीतारमण ने एक और कारण की भी चर्चा की। उन्होंने कहा, ''चुनाव जीतने की दूसरी कई कसौटियां जिनका इस्तेमाल ये लोग करते हैं, उनका सवाल भी उठेगा...आप किस समुदाय से हैं या आप किस धर्म से हैं...मैंने कहा नहीं, मुझे नहीं लगता है कि मैं यह कर पाऊंगी।'' अपने इस बयान से सीतारमण ने उन दो शक्तियों को रेखांकित कर दिया जो चुनाव में हर प्रत्याशी की किस्मत का फैसला करती हैं लेकिन जिनकी भूमिका को कोई खुल कर स्वीकार नहीं करता – पैसा और जाति व धर्म की पहचान। अभी सीतारमण राज्यसभा की सदस्य हैं। वे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के दोनों कार्यकाल में मंत्री रही हैं और दोनों बार राज्यसभा के ज़रिए ही संसद में पहुंची है। बीजेपी इस बार राज्यसभा के ज़रिए संसद पहुंचे अपने मंत्रियों को लोकसभा चुनाव लड़ा रही है। वाणिज्य और उद्योग मंत्री पीयूष गोयल के अलावा पर्यावरण और श्रम मंत्री भूपेंद्र यादव लोकसभा चुनाव लड़ रहे हैं। अभी दोनों ही राज्यसभा के सदस्य हैं। चुनाव की जंग में जाति और धर्म की पहचान के बावजूद पैसे की अहमियत कम नहीं हो जाती। यह बात देश का वित्तमंत्री की कुर्सी पर बैठा व्यक्ति कहे तो उस पर शंका करने की कोई गुंजाइश नहीं रहती। प्रधानमंत्री कार्यालय की वेबसाइट पर 2022-23 के सीतारमण के हलफनामे के मुताबिक उनके पास करीब 2.57 करोड़ रुपयों की चल और अचल संपत्ति है। राज्यसभा में दिए गए उनके एक अन्य हलफनामे के मुताबिक इमारत 10,854 वर्ग फुट की है और प्लॉट 4,806 वर्ग फुट का। वित्त मंत्री के पास कोई गाड़ी नहीं है, बस एक स्कूटर है जिसकी कीमत उन्होंने 28,200 रुपये बताई है। इसी हलफनामे के मुताबिक 2020-21 में उन्होंने 8,08,000 रुपये मंत्री के रूप में वेतन से पाए। अपने पति की संपत्ति के बारे में उन्होंने कोई जानकारी साझा नहीं की है। जब ऐसा संपत्ति धारक भी कहे कि उसके पास चुनाव लड़ने को पैसे नहीं है तो यह पूछा जाना स्वाभाविक ही है कि क्या इस देश में जन प्रतिनिधि के लिए धनी होना पहली शर्त हो गई है?

कानूनी रूप से चुनावों में कोई भी प्रत्याशी कितना खर्च सकता है उसके लिए एक सीमा तय है। 2024 के लोकसभा चुनावों के लिए चुनाव आयोग ने 95 लाख रुपये प्रति प्रत्याशी की सीमा तय की है। सीतारमण की संपत्ति देखी जाए तो वे इस सीमा का खर्च उठाने में सक्षम लगती हैं। लेकिन हकीकत यह है कि चुनावों में इस निर्धारित सीमा से कई गुना अधिक पैसा खर्च होता है। अमेरिकी पत्रिका द इकोनॉमिस्ट की एक रिपोर्ट के मुताबिक भारत में 2024 के लोकसभा चुनाव दुनिया के सबसे महंगे चुनाव साबित हो सकते हैं –अमेरिकी चुनावों से भी ज्यादा महंगे। इस रिपोर्ट के मुताबिक इन लोकसभा चुनावों में कम से कम 83 हजार करोड़ रुपये खर्च हो सकते हैं। इसका मतलब है 543 सीटों के हिसाब से औसतन हर सीट के लिए कम से कम 153 करोड़ रुपये। इससे पहले एक भारतीय निजी संस्थान ने 2019 के लोकसभा चुनावों में हुए खर्च का अनुमान लगाया था। सेंटर फॉर मीडिया स्टडीज के मुताबिक 2019 में कुल 55 से 60,000 करोड़ रुपये खर्च हुए थे, यानी करीब 100 करोड़ प्रति सीट। अगर हर सीट पर 10 गंभीर प्रत्याशी भी हों, तो हर प्रत्याशी को कम से कम 10 करोड़ रुपये तो खर्च करने ही पड़ेगे और सीतारमणके पास सिर्फ ढाई करोड़ रुपये हैं। कहने को तो चुनाव में खर्चा प्रत्याशी की बात मतदाताओं तक पहुंचाने के लिये किया जाता है मगर वास्तव में चुनावी प्रचार की व्यवस्था इतनी आसान नहीं है। बहुत से लोग मानते हैं कि भारतीय मतदाता, बाज़ार में निवेशक की भांति व्यवहार करता है। वह उसी स्क्रिप्ट के पीछे दीवाना रहता है जो ऊंची चढ़ रही हो। स्क्रिप्ट को ऊंचा चढ़ाने के लिये ही सारे प्रपंच होते हैं और उस पर पैसे खर्च होते हैं। इन प्रपंचों में अब एक नया खंड इंफ्लुएंसर्सका भी जुड़ गया है। वह इसलिए कि भारत दुनिया में इंटरनेट का उपयोग करने वाला सबसे बड़ा देश है। यहां इसके 80 करोड़ उपयोगकर्ता हैं। इंस्टाग्राम और यूट्यूब जैसे सोशल मीडिया के सबसे ज्यादा उपभोक्ता भी इसी देश में हैं। इसीलिए राजनीतिक दलों को लग रहा है कि इनइंफ्लुएंसर्स की बड़ी ताकत है जिसका लाभ उठाना चाहिए। नये मीडिया को अपनाने अव्वल प्रधानमंत्री ने खुद सरकारी योजनाओं के प्रचार-प्रसार के लिए पिछले एक साल में कई सोशल मीडिया इंफ्लुएंसर्स से बात या मुलाकात की है। ये इंफ्लुएंसर्स सभी ऐसे लोग हैं जिनके इंस्टा या यूट्यूब पर फॉलोअर्स की बड़ी संख्या है। कुछ तो ऐसे हैं जिनके फॉलोअर्स करोड़ों में हैं। मुख्य धारा के मीडिया के घटते प्रभाव को भुनाते हुए सोशल मीडिया से पैसा कमाने का यह एक नया उद्यम बन गया है। हम पाते हैं कि केंद्र तथा राज्यों के मंत्रीतथा अन्य नेता मुख्यधारा के मीडिया को दरकिनार कर इन लोगों से मेलजोल अधिक बढ़ा रहे हैं। इनमें ट्रैवल, फूड, धर्म और प्रौद्योगिकी, हर तरह के क्षेत्र के इंफ्लुएंसर्स शामिल हैं। पिछले साल बीजेपी ने इन क्षेत्रों के सोशल मीडिया इंफ्लुएंसर्स का एक सम्मेलन भी बुलाया था जिसमें उन्हें बीजेपी की नीतियों और नौ साल में सरकार की उपलब्धियों के बारे में बताया था तथा उन्हें इनके बारे में सामग्री बनाने और आगे शेयर करने का कहा था। संचार जगत में यह माना जाता है कि अगर कोई तीसरा बात करता है तो उससे उत्पाद की विश्वसनीयता बढ़ती है। ऐसा ही यदि राजनैतिक दलों और विचारों के लिए हो तो मतदाताओं के मन में उन पर भरोसा बढ़ता है। इंफ्लुएंसर्स का फायदा उठाने की कोशिश सिर्फ बीजेपी ही नहीं कर रही है। सोशल मीडिया पर कांग्रेस भी इन इंफ्लुएंसर्स के जरिए लोगों का रुझान अपनी ओर करने की कोशिश कर रही है। पिछले साल पंजाब विधानसभा चुनाव में आम आदमी पार्टी ने भी ऐसे ही प्रयोग किए थे। दक्षिण में तेलंगाना की भारत राष्ट्र समिति ने राज्य चुनाव में अपने प्रचार के लिए करीब 250 इंफ्लुएंर्स को साथ लिया था। राजस्थान में पूर्व मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने इनका जम कर उपयोग किया था, भले ही चुनावी नतीजों में वे पिछड़ गए। इस प्रकार पोस्टरों, बैनर, प्रिन्ट और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में विज्ञापन, सभाओं के आयोजन, प्रचारकों के यातायात के खर्चों तथा मतदाताओं के सीधे प्रलोभनों के अलावा चुनावों में यह नया खर्च जुड़ गया है। राजनेता यह खर्च खासकर युवा मतदाताओं को अपनी ओर करने के लिये करते हैं। इस बार लोकसभा चुनावों में भारत में दो करोड़ से ज्यादा ऐसे मतदाता हैं जिनकी उम्र 18 से 29 साल के बीच है। ये वे लोग हैं जिन्हें इंटरनेट पर सबसे सक्रिय माना जाता है। इसी आयुवर्ग के मतदाता जो वॉट्सऐप और फेसबुक, रील्स के उपभोक्ता होते है और वे हर नए चुनावों में पहली बार वोट देने वालों में होते हैं। इंफ्लुएंसर्स के जरिए राजनीतिक दल सीधे इन लोगों तक पहुंच बना कर उन्हें अपनी ओर करने का प्रयत्न करते हैं। संचार विशेषज्ञ मानते हैं कि इंफ्लुएंसर्स की सोशल मीडिया पोस्ट सीधा प्रोपेगैंडा होती है जो बाजार के उत्पादों की तरह नेताओं और विचारों को मतदाताओं के दिमाग में उतरने का प्रयास करती है। इसलिए प्रचार उद्यम इन दिनों ऐसी व्यावसायिक सेवा बन गया है जो राजनेताओं के लिये भी काम करता है। मीडिया विशेषज्ञ मानते हैं कि भारतीय मतदाता शेयर मार्केट के छोटे निवेशकों की भांति व्यवहार करने लगा है। जिस प्रकार ऊंचे चढ़ते स्क्रिप्ट की तरफ ही अधिकतर निवेशक लपकते हैं उसी प्रकार भारतीय मतदाता भी उसे अपना मत देता है जिसके जीतने की प्रत्यक्ष होती है। छोटा निवेशक अपने निवेश से बाज़ार में तुरंत फायदा चाहता है। शेयर बाज़ार में अधिकांश देशी निवेशक लंबे काल के लिये निवेश नहीं करते। उन्हें इसी से मतलब होता है आज क्या मिल रहा है। सभी जानते हैं कि मतदाताओं के ऐसे समूह हर जगह होते हैं जो प्रत्याशी से अपने वोट के बदले कुछ अपेक्षा करता है। इसी कारण चुनाव में नकदी का प्रचलन सबसे अधिक होता है जिसका कोई हिसाब किताब नहीं होता। वह काला धन होता है। इलेक्टोराल बॉन्ड ने अपनी खामियों के बावजूद नकदी की जगह बैंकिंग चैनल से लेनदेन की व्यवस्था करके काले धन पर अंकुश जरूर लगाया था। वह स्कीम अब समाप्त हो गई है और चुनावों में फिर से नकद चंदे का बोलबाला हो गया है। विराट चुनावी खर्च के लिये पैसा नहीं होने की बात करके सीतारमण ने फिर से हमें यह सोचने को मजबूर किया है कि किस प्रकार पैसा प्रत्यासी की काबिलियत पर हावी हो जाता है। संविधान निर्माताओं ने राज्यसभा में ऐसे लोगों को लाने की संवैधानिक व्यवस्था दी जिसके जरिए ऐसे लोगों का लाभ शासन को मिल सके जो प्रतिस्पर्धी चुनावी राजनीति में नहीं पड़ना चाहते। विशेषज्ञों के अनुभवों का लाभ लेने के लिये उन्हें राज्यसभा के जरिए संसद में लाने की संविधान बनाने वालों ने संभवतः कल्पना की थी। हालांकि उनका यह आदर्श टिक नहीं सका है और अमीर, उद्योगपति तथा बड़े राजनेताओं के चहेते भी राज्य सभा में पहुंच जाते हैं।

मीडिया विशेषज्ञ मानते हैं कि भारतीय मतदाता शेयर मार्केट के छोटे निवेशकों की भांति व्यवहार करने लगा है। जिस प्रकार ऊंचे चढ़ते स्क्रिप्ट की तरफ ही अधिकतर निवेशक लपकते हैं उसी प्रकार भारतीय मतदाता भी उसे अपना मत देता है जिसके जीतने की प्रत्यक्ष होती है।

–अतिथि संपादक,
राजेन्द्र बोड़ा,
(वरिष्ठ पत्रकार एवं विश्लेषक)

प्रथम तीर्थंकर भगवान आदिनाथ

भागचंद जैन मित्रपुरा

1) प्रथम तीर्थंकर आदिनाथ भूमण्डल के कर्मपथ प्रदर्शक थे

2) सृष्टि को सुव्यवस्थित बनाने का ज्ञान दिया।

3) आज ऐसे सृष्टा- ब्रह्मा का जन्म कल्याणक एवं तप कल्याणक दिवस है

4) इस देश का नाम भारत, आदिनाथ के जेष्ठ पुत्र भरत के नाम पर

5) अपनी सुपुत्रियों के माध्यम से लिपि एवं अंक ज्ञान

वर्तमान में इस जंबूद्वीप के भरत क्षेत्र में अवसर्पिणी काल के स्थान पर हुंडावसर्पिणी काल, जिसमें अघटित घटनाएं घट जाएं, का संचार हो रहा है। आदिनाथ भगवान इस काल के प्रथम तीर्थंकर है जिनका जन्म भरत क्षेत्र में हुआ था। इनको वृषभदेव एवं ऋषभदेव के नाम से भी जाना जाता है।

भगवान ऋषभनाथ का जन्म भारत के पावन शहर अयोध्या की भूमि पर हुआ था। वही अयोध्या भूमि जहाँ मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्रीराम ने माता कौशल्या के गर्भ से जन्म लिया था। आदिनाथ का जन्म चैत्र कृष्णा नवमी को उत्तरषाढ़ा नक्षत्र में हुआ था। इनके पिता का नाम राजा नाभिराज था जो अयोध्या के राजा थे एवं माता का नाम मरूदेवी था। जैन धर्म के अनुसार यह तृतीय काल था। आदिनाथ का यशस्वती तथा सुनंदा के साथ विवाह हुआ था। यशस्वती से उन्हें 99 पुत्र (चक्रवर्ती राजा भरत सहित) तथा एक पुत्री ब्राह्मी हुए थे। सुनंदा से उन्हें एक पुत्र बाहुबली तथा एक पुत्री सुंदरी हुए थे। स्वयं के मुनि बन जाने के बाद उन्होंने अपने पुत्र भरत को अयोध्या का राजा घोषित कर दिया था और बाकि पुत्रों में भारत के अन्य राज्य बाँट दिए थे। चक्रवर्ती भरत के नाम पर ही इस देश का नाम भारत पड़ा था।

भगवान आदिनाथ के कई अन्य नाम ऋषभदेव /ऋषभनाथ, वृषभनाथ, नाभिया, आदिपुरुष, आदिब्रह्मा, प्रजापति कहा गया। इस युग के प्रथम तीर्थंकर आदिनाथ ही थे किंतु पिछले युग के अंतिम तीर्थंकर भगवान सम्प्रत्ति थे। भगवान सम्प्रत्ति उस युग के अंतिम (चौबीसवें) तीर्थंकर थे। भगवान आदिनाथ का वर्ण- क्षत्रिय (इश्वाकू वंश) था। उनकी देहवर्ण- स्वर्ण रंग (नारंगी-पीला) थी। लंबाई/ ऊंचाई- 500 तीर के बराबर/ 4920 फीट/ 1500 मीटर थी। उनकी आयु- 84 लाख वर्ष पूर्व थी।

भोगभूमि से कर्मभूमि में परिवर्तन

आदिनाथ को इस युग के निर्माता के रूप में जाना जाता है। इनसे पहले मनुष्य कोई काम नही करते थे अर्थात पढ़ना-लिखना, खेती, व्यापार इत्यादि किसी भी चीज़ का प्रावधान नही था। उस समय मनुष्य की सभी आवश्यकताएं कल्पवृक्ष से पूरी हो जाया करती थी। लेकिन धीरे-धीरे कल्पवृक्ष की शक्तियां कम होती गयी थी। कल्पवृक्षों के बाद बिना बोयी हुई धान्य पैदा होती थी। उस समय वर्षा होने से खेतों में अपने आप तरह-तरह के धान्य के अंकुर उत्पन्न होकर समय पर योग्य फल देने वाले हो गए थे। उससे सामान्य जन का जीवन सही चल रहा था। कालांतर में धान्य, औषधि सहित सारी पैदावार नष्ट हो गई थी। भोगभूमि की रचना मिट चुकी थी और कर्मभूमि की रचना प्रारंभ हो रही थी। मनुष्य भूख प्यास से दुखी होने लगे। लोगों को कोई उपाय नहीं सूझने पर राजा नाभिराज की आज्ञानुसार भगवान आदिनाथ के पास जाकर अपनी व्यथा बताई।

इसके बाद भगवान आदिनाथ ने पूर्व-पश्चिम विदेहों की तरह ग्राम, शहर आदि का विभाग कर मनुष्य को आवश्यक ज्ञान दिया।

आत्म निर्भरता /स्वावलंबन का ज्ञान

उन्होंने मनुष्य को जीवन जीने के लिए छह काम सिखाये। कहने का तात्पर्य यह हुआ कि भगवान आदिनाथ ने ही लोगों को सुनियोजित तरीके से भवन निर्माण करना, नगर बसाना, खेती करके अन्न उगाना और उससे भोजन बनाना, शिक्षा प्राप्त करना और उससे समाज में नियमों की स्थापना करना, व्यापार करके उन्नति करना और पैसे कमाना, अपनी या अपने परिवार या देश की रक्षा करना तथा इन सभी को लिपिबद्ध करना इत्यादि सिखाया।

भगवान आदिनाथ ने अपनी सुपुत्रियों ब्राह्मी को लिपि विद्या एवं सुंदरी को अंक विद्या का ज्ञान कराकर, इन विद्याओं को प्रसारित करवाया।

सुशासन का निर्वहन

सृष्टि की सुव्यवस्था की, लोग उन्हें सृष्टि ब्रह्मा एवं उस युग को कृतयुग नाम से पुकारने लगे। इस तरह से मनुष्य को मूलभूत चीज़ों को सिखाने का श्रेय भगवान आदिनाथ को जाता है। उन्होंने प्रथम बार अपनी नगरी अयोध्या में

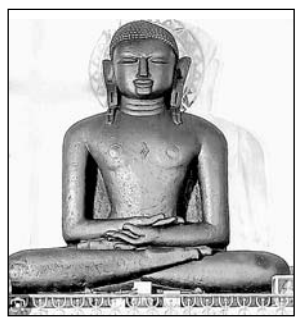

शासन-व्यवस्था, नियम-सिद्धांत, अधिकार-कर्तव्य इत्यादि की स्थापना की थी। इसके बाद सब कुछ नियमों के अनुसार चलने लगा था तथा धर्म की स्थापना हुई थी। भगवान आदिनाथ का प्रजा के ऊपर पूर्ण व्यक्तित्व प्रगट हो गया, तब इन्द्र ने सभी देवों के साथ आकर महाराज नाभिराज की सम्मति से उनका राज्याभिषेक किया। चारों ओर हर्ष की लहर दौड़ गई। अपने प्रथम उद्बोदन में प्रभावक शब्दो में धर्म, अर्थ आदि पुरुषार्थ का स्पष्ट विवेचन किया। अपनी विनयशीलता दर्शाते हुए सृष्टि का भार वहन करने के क्रम में राज्य करना स्वीकार किया। प्रजा को सुव्यवस्थित बनाने के लिए कार्य विभाजन कर योग्यता के अनुसार कार्य बाहर सौंप दिया। इस व्यवस्था से लोग सुखमय जीवन व्यतीत करने लगे थे। उन्होंने द्रव्य क्षेत्र, काल और भाव का ध्यान रखते हुए दंड विधान का भी प्रावधान किया। उन्होंने तिरेसठ लाख पूर्व तक राज किया। एक बार देवता व स्वर्ग के राजा इंद्र देव आदिनाथ की सभा में आये हुए थे। तब वे दोनों नृतकियों का नृत्य देख रहे थे। उसी समय नीलांजना नामक एक नृतकी की आयु पूरी हो गयी और उसकी मृत्यु हो गयी। यह देखकर भगवान आदिनाथ को मृत्यु के दुखद सत्य का ज्ञान हुआ। उन्होंने उसी समय सांसारिक मोह-माया, राजपाट इत्यादि त्याग कर सन्यासी बन जाने का निर्णय लिया। इसी बीच उन्होंने अपना राज्य अपने पुत्र भरत को राजगद्दी देकर बाहुबली को युवराज बना दिया था। देवता गण भगवान की पालकी अयोध्या के समीपवर्ती सिद्धार्थ नामक वन में ले गए। वहां चंद्रकांत मणि शिला पर विराजित होकर वस्त्रों का त्याग कर दिया और दिगंबर अवस्था में आ गए एवं पंच मुष्ठियों से केशलोच कर लिया। अब ऋषभनाथ समस्त परिग्रहों का त्याग कर चैत्र कृष्णा नवमी के दिन जिन दीक्षा ग्रहण की।

ऋषभदेव जी के त्याग को देखते हुए उनके साथ कई राजा व प्रजा के लोग भी आये थे जिन्होंने सन्यास ले लिया था। वन में भगवान आदिनाथ छः माह का अनशन धारण किए हुए एक आसान पर बैठे हुए थे। साथी राजा एवं प्रजा के लोग जो मुनि बन गए थे, भूख प्यास से व्याकुल होकर मुनिमार्ग से भ्रष्ट होकर जंगलों में चले गए थे।

तप मार्ग से ही आत्म कल्याण

ध्यान करते करते जब छः माह व्यतीत हो गए तो ऋषभदेव ने ध्यान मुद्रा समाप्त कर आहार लेने का विचार किया और गांवों से विहार करना शुरू किया। चूँकि वह प्रथम तीर्थंकर थे, इसलिए लोगों को यह नही पता था कि उन्हें आहार में क्या दे एवं किस विधि से दे, इसलिए वे उन्हें आभूषण, हीरे-मोती इत्यादि बहुमूल्य वस्तुएं दिया करते थे, ना कि भोजन। इससे उनके साथ के लोगों में व्याकुलता होने लगी और वे भूख-प्यास से बेहाल होने लगे। तब उनमे से कईयों ने जैन धर्म में से कई अन्य मतों/ संप्रदायों की शुरुआत की थी।

इसी तरह भगवान आदिनाथ को बिना भोजन रहते हुए 12 माह से ऊपर हो गए थे। एक दिन वे भ्रमण करते हुए हस्तिनापुर पहुंचे जहाँ राजा श्रेयांश ने जाति स्मरण होने पर आहार विधि का भान हुआ और भगवान ऋषभ नाथ का नवधा भक्ति पूर्वक पड़गाहन किया और भगवान के पाणीपात्र में इक्षुरस की धाराएं अर्पित की। उन्होंने लगभग 1 वर्ष बाद कुछ ग्रहण किया था, इसलिए इस दिन का महत्व बढ़ गया। यह दिन वैशाख शुक्ल तृतीया था। जिसे आज अक्षय तृतीया के रूप में मनाया जाता हैं।

केवलज्ञान प्राप्ति एवं दिव्य देशना

भगवान आदिनाथ ने लगभग एक हज़ार वर्षों तक कठोर तपस्या की। पुरीमताल के पास शकट नामक वन में वटवृक्ष के नीचे पद्मासन लगाकर बैठ गए। उन्होंने चार घातियां कर्मो का नाश कर फाल्गुन कृष्ण एकादशी को ध्यानावस्था में कैवल्य ज्ञान प्राप्त किया। यहाँ पर कैवल्य ज्ञान से अर्थ भूत, वर्तमान व भविष्य का संपूर्ण ज्ञान प्राप्ति से है।

इसके बाद इंद्र देव व बाकि देवताओं ने मिलकर भगवान आदिनाथ के उपदेश देने के लिए समवशरण की स्थापना की थी। इसमें वे देवताओं, मनुष्यों, मुनियों, तिर्यंचो इत्यादि को धर्म का उपदेश दिया करते थे। भगवान आदिनाथ के 84 गणधर, 84 हज़ार मुनि (साधू या जैन भिक्षु, पुरुष) तथा 3.5 लाख के आसपास साध्वियां (जैन भिक्षु, महिला) थी। भगवान के मुख से दिव्यवाणी प्रकट हुई जो ओंकार रूप में थी। उन्होंने अतिशयपूर्ण दिव्य ध्वनि मे धर्म-अधर्म का स्वरूप समझा कर सम्यग्दर्शन, ज्ञान, चारित्र, जीव, अजीव, आस्त्रव, बंध, संवर, निर्जरा और मोक्ष इन सात तत्वों का; जीव, पुद्गल, धर्म-अधर्म, आकाश और काल इन छः द्रव्यों का, पुण्य पाप का लोक – अलोक का स्वरूप बतलाया था। जब तक प्राणियों की दृष्टि भौतिक पदार्थों में उलझी रहेगी, तब तक उसे आत्मीय आनंद का अनुभव नहीं सकता। उसे प्राप्त करने के लिए मोह छोड़कर कठिन तपस्याएं, इंद्रियों पर विजय, आत्म ज्ञान में अचल होने की आवश्यकता है। 'अप्पा सो परमप्पा' उन्होंने आत्मा को परमात्मा बताया। सभी तीर्थंकरों ने इस दर्शन को आधार बनाकर स्व – पर का कल्याण पथ दिखलाया। यह दर्शन जैन धर्म को और धर्मों से अलग करता हैं।

मोक्षमार्ग की ओर प्रशस्त

केवल ज्ञान प्राप्ति के पश्चात आदिनाथ तीर्थंकर के रूप में 99 हज़ार वर्ष तक पृथ्वी पर रहे और धर्म का प्रचार-प्रसार किया। जब उनकी मृत्यु के 14 दिन शेष रह गए थे तब वे अष्टापद पर्वत (कैलाश पर्वत) चले गए थे। अंत में उन्होंने माघ मास की कृष्ण चतुर्दशी के दिन निर्माण/ मोक्ष को प्राप्त कर संसार के आवागमन से मुक्त हो गए। इस दिन को जैन धर्म में भगवान आदिनाथ के निर्वाणोत्सव या मोक्ष प्राप्ति के रूप में मनाया जाता है।

उनके साथ ही उनके कई भक्तों/ मुनियों ने समाधि ले ली थी तथा मोक्ष को प्राप्त किया था। इसके पश्चात स्वयं इंद्र देव सभी देवताओं के साथ कैलाश पर्वत आये थे और भगवान आदिनाथ के शरीर (नख और बाल) का अंतिम संस्कार किया था। उसके कुछ वर्षों में तृतीय काल का अंत हो गया था तथा जैन धर्म का चतुर्थ काल शुरू हुआ।

इनके दूसरे पुत्र बाहुबली ने अपने जेष्ठ भ्राता भरत के साथ जल युद्ध, चक्षु युद्ध एवं मल्ल युद्ध में विजयी होने पर भी राजपाट को छोड़कर मोक्ष मार्ग अपनाया एवं निशस्त्रीकरण और त्याग का संदेश दिया।

हिंदू धर्म के कई ग्रंथों में ऋषभदेव या आदिनाथ जी के नाम का महापुराण आदि में वर्णन मिलता है। सर्वप्रसिद्ध भागवतपुराण में भी लिखा गया है कि जैन धर्म के संस्थापक ऋषभ देव जी थे। उन्हें एक महान ऋषि व तपस्वी की संज्ञा दी गयी है। सातवी शताब्दी में आचार्य मानतुंग जी द्वारा संस्कृत में रचित महाग्रंथ भक्तामर स्तोत्र में आदिनाथ भगवान के गुणों की स्तुति की है। इसमें वर्णित सभी 48 काव्यों का पाठ करने से मानव जीवन में आने वाले सभी कष्ट दूर होते है। आज जन्म कल्याणक के अवसर पर प्रथम तीर्थंकर आदिनाथ की स्तुति करे।

संकलन–भागचंद जैन मित्रपुरा,
अध्यक्ष अखिल भारतीय जैन बैंकर्स फोरम, जयपुर।

आदिनाथ भगवान के जयकारों से गूंजे जिनालय

डूंगरपुर, (निसं)। अखिल भारतीय जैन श्वेताम्बर मूर्ति पूजक युवक महासंघ के तत्वावधान में मंगलवार को आदिनाथ भगवान के जन्म कल्याण व दीक्षा कल्याण के तहत विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन माणक चौक स्थित आदिनाथ जैन मंदिर में श्रद्धाभाव के साथ सम्पन्न हुआ। वहीं दूसरी और नवाडेरा स्थित आदिनाथ दिगम्बर जैन मंदिर, उदयविलास स्थित केसरीयाजी मंदिर में विविध धार्मिक अनुष्ठान आयोजित किये गये।

- **आदिनाथ भगवान के जन्म कल्याण व दीक्षा कल्याण के तहत विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन**
- **जिलेभर में आदिनाथ जयंती पर आदिनाथ भगवान की विशेष पूजा-अर्चना की गई**

भगवान आदिनाथ के जन्म कल्याणक निमित्त माणक चौक स्थित जिनालय में भगवान का अभिषेक किया।

इस अवसर पर सुबह 6.30 बजे माणक चौक स्थित आदिनाथ जिनालय में भक्ताम्बर पाठ का आयोजन हुआ। समय प्रवेश पर प्रभावना 5 जनों को स्व. नर्वदा बेन गोवर्धनलाल परिवार की ओर से प्रभावना वितरित की गई तथा जिनालय में भगवान का दुग्ध प्रक्षालन, केसर पूजा, फूल पूजा व स्नात्र पूजा में बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं ने हिस्सा लिया। रात्रि में मंदिर स्थल पर भक्ति संध्या का आयोजन हुआ। जिसमें श्रद्धालुओं ने भगवान के जन्म कल्याण व दीक्षा कल्याण संबंधित भक्ति गीतों की प्रस्तुति देकर सभी हर्ष विभोर कर दिया। जिलेभर में आदिनाथ जयंती पर आदिनाथ भगवान की विशेष पूजा-अर्चना की गई। तथा भगवान की प्रतिमा का आकर्षक आंगी सजाई गई। इस अवसर पर बड़ी संख्या में समाज जन महिला पुरूष उपस्थित थे। इस दौरान सामान्य चिकित्सालय में भर्ती रोगियों को युवक महासंघ द्वारा फल वितरण किये गये। साथ ही इस अवसर स्नात्र पूजा का आयोजन हुआ तथा शाम को भक्ति संध्या एवं आरती का आयोजन हआ। इधर उदयविलास स्थित केशरीयाजी मंदिर में भी पंचामृत अभिषेक सहित विविध धार्मिक अनुष्ठान हुए तथा सायं को आरती का आयोजन हुआ। इस दौरान युवक महासंघ के अध्यक्ष आलोक शाह, विशा हुम्मड संघ के अध्यक्ष पूरणमल दावडा, वीशा पोरवाड संघ के अध्यक्ष गजेन्द्र जैन, पूर्व अध्यक्ष हेमेन्द्र मेहता, जैन नवयुवक मण्डल के अध्यक्ष सुबोध सरैया, शरद सरैया, अशोक दोशी, महेश दोशी, प्रदीप सरैया, पवन दोशी सहित बड़ी संख्या में धर्मप्रेमी उपस्थित थे। इस अवसर पर मंदिर को भी आकर्षक रूप से सजाया गया था तथा बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं ने जिनालय पहुंच कर देवदर्शन किये।

आरटीई के लिए ऑनलाइन पोर्टल आज से खुलेगा

बीकानेर, (निसं)। प्रारंभिक शिक्षा निदेशालय ने निःशुल्क और अनिवार्य शिक्षा का अधिकार के तहत शिक्षा सत्र 2024-25 के लिए ऑनलाइन आवेदन मांगे हैं। आवेदन के लिए ऑनलाइन पोर्टल 3 अप्रेल से खुल जाएगा और 21 अप्रेल तक खुला रहेगा। इस संबंध में शिक्षा विभाग ने विस्तृत निर्देश भी जारी कर दिए।

- **आवेदन के लिए ऑनलाइन पोर्टल 21 अप्रेल तक खुला रहेगा**

निदेशक सीताराम जाट के अनुसार निजी स्कूलों को कैचमंट एरिया में रहने वाले कमजोर वर्ग एवं असुविधाग्रस्त समूहों के बच्चों को प्री प्राइमरी और कक्षा प्रथम में निःशुल्क प्रवेश देना होगा। प्री प्राइमरी के लिए प्रवेश के समय बच्चे की आयु 3 वर्ष या इससे अधिक और 4 वर्ष से कम होनी चाहिए। जबकि कक्षा प्रथम में प्रवेश के लिए 5 वर्ष या इससे अधिक परन्तु 7 वर्ष से कम होनी चाहिए। अभिभावक 3 अप्रेल से 21 अप्रेल तक आवेदन कर सकते हैं। राज्य स्तर पर 23 अप्रेल तक आवेदनों का लॉटरी के माध्यम से वरीयता क्रम निर्धारित किया जाएगा। इसके बाद चयनित विद्यार्थी के अभिभावकों को 30 अप्रेल तक ऑनलाइन रिपोर्टिंग करनी होगी।

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

बुधवार 3 अप्रेल, 2024

चैत्र मास, कृष्ण पक्ष, नवमी तिथि, बुधवार, विक्रम संवत 2080, उत्तराषाढ़ा नक्षत्र रात्रि 9:48 तक, शिव योग सांय 4:09 तक, तैतिल करण प्रातः 7:19 तक, चन्द्रमा आज मकर राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-मीन, चन्द्रमा-कुम्भ, मंगल-कुम्भ, बुध-मीन, गुरू-मेष, शुक्र-मीन, शनि-कुम्भ, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में।

आज कुमार योग रात्रि 9:48 से सूर्योदय तक है। आज बुध अस्त पश्चिम दिन 2:16 पर होगा। आज भगवान आदिनाथ जयन्ती और तप कल्याणक दिवस (जैन) है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: लाभ-अमृत सूर्योदय से 9:25 तक, शुभ 10:58 से 12:30 तक, चर 3:26 से 5:09 तक, लाभ 5:09 सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 12:00 से 1:30 तक। सूर्योदय 6:19, सूर्यास्त 6:41

मेष
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

वृष
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। आर्थिक मामलों में लापरवाही ठीक नहीं रहेगी।

मिथुन
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। आर्थिक मामलों में परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। यात्रा टालना ठीक रहेगा।

कर्क
परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। सामूहिक प्रयासों से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

सिंह
अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। अस्त-व्यस्त कार्य व्यवस्थित होने लगेंगे। विवादित मामलों का निपटारा हो सकता है। शुभ कार्य के लिए यात्रा संभव है।

कन्या
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। स्वास्थ्य संबंधित मामलों में लापरवाही ठीक नहीं रहेगी।

तुला
घर-परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी। व्यावसायिक विवादों से राहत मिल सकती है। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

वृश्चिक
व्यावसायिक कार्यों के संबंध में उचित सोच-विचार हो सकता है। व्यावसायिक मामलों में उचित सफलता मिल सकती है। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। परिवार में शुभ संदेश प्राप्त होंगे।

धनु
व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी। व्यावसायिक कार्य सुगमता से बनने लगेंगे। महत्वपूर्ण कार्यों में उचित स